इकाई 9 नृवंशविज्ञान विधि*

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 नृवंशविज्ञान क्या है?

9.3 क्षेत्र कार्य में नृवंशविज्ञान विधि कैसे प्रयोग करें?

9.4 नृवंशविज्ञान विधि के प्रयोग में आविर्भावी प्रवृत्तियाँ

9.5 नृवंशविज्ञान विधि के गुण–दोष

9.6 सारांश

9.7 संदर्भ

9.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के बाद आप इस योग्य होंगे कि –

- नृवंशविज्ञान क्या होता है, बता सकें;
- नृवंशविज्ञान एक सामाजिक शोध विधि के रूप में कैसे विकसित हुआ, इस पर चर्चा कर सकें;
- मालिनोवस्की द्वारा नृवंशविज्ञान विधि के प्रयोग को स्पष्ट कर सकें; तथा
- नृवंशविज्ञान विधि के प्रयोग में आविर्भावी प्रवृत्तियों पर चर्चा कर सकें।

9.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हमारा सरोकार नृवंशविज्ञान (ethnography) से रहेगा। यह बड़ी ही रोचक बात है कि नृवंशविज्ञान एक शोध विधि भी है और शोध का उत्पाद भी। आइए, नृवंशविज्ञान के इस आयाम को कुछ और गहराई से समझें। एक शोध विधि के रूप में नृवंशविज्ञान अथवा कहें शोध की नृवंशविज्ञान विधि के रूप में नृवंशविज्ञान का अर्थ होता है – आँकड़ा संग्रहण की ऐसी तकनीकों की एक संयुक्त श्रृंखला जो किसी समूह के रहन–सहन संबंधी समग्र व्याख्या प्रस्तुत करने के लिए संयोजन में प्रयोग की जाती है। शोध के उत्पाद के रूप में नृवंशविज्ञान का अर्थ होता है – शोध के परिणाम के रूप में शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत वर्णनात्मक वृतांत।

हम इकाई की शुरुआत इस समझ को विकसित करने के साथ करेंगे कि नृवंशविज्ञान क्या होता है। तदंतर हम स्पष्ट करेंगे कि कालांतर में नृवंशविज्ञान एक विधि के रूप में कैसे विकसित हुआ और शोध में नृवंशविज्ञान विधि कैसे अपनाई जाती है। अंत में हम नृवंशविज्ञान विधि के प्रयोग में नए रुझानों पर चर्चा करेंगे।

* नीता माथुर, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय, नई दिल्ली कृत

9.2 नृवंशविज्ञान क्या है?

नृवंशविज्ञान की एक ऐसी कोई मानक अथवा सरल परिभाषा नहीं है जो सभी सामाजिक विज्ञान शोधकर्ता स्वीकार करते हों। फिर भी, मोटे तौर पर, नृवंशविज्ञान को किसी सामाजिक अथवा सांस्कृतिक समूह के पूर्ण, विस्तृत वृत्तांत के रूप में लिया जाता है। विशिष्ट रूप से नृवंशविज्ञान में 'वह नृवंशविज्ञानशास्त्री शामिल होता है जो किसी विस्तारित समयावधि तक लोगों के जीवन में जो होता है वह देखते हुए, जो कहा जाता है उसे सुनते हुए, उनसे प्रश्न पूछते हुए – वस्तुतः अपने शोध के मुख्य विषयों पर प्रकाश डालने के लिए जो भी आँकड़े उपलब्ध हों उन्हें एकत्र करते हुए भाग लेता है' (हैमर्सले एवं एटकिंसन, 1995: 1)। एक परंपरागत अर्थ में, नृवंशविज्ञान में किसी समूह अथवा समुदाय का समग्र विवरण शामिल होता है।

औपनिवेशिक काल में मूल निवासियों का विवरण प्रायः प्रशासन संबंधी औपनिवेशिक कार्यसूची के एक उपकरण के रूप में प्रयोग किया जाता था। अनेक पूर्वतर मानवजाति वर्णन जे. एच. हटन जैसे प्रशासकों द्वारा ही लिखे गए हैं, यथा *दि अंगामी नागा* और *द सेमा नागा*। ये लोगों के अवैयक्तिक, विस्तृत वृत्तांत हैं, जो कि मुख्यतः प्रशासकों के लाभार्थ ही लिखे गए थे। मूल निवासियों के विषय में सूक्ष्म विवरण समेत संपूर्ण जानकारी देने वाले ऐसे अभिलेख प्रशासकों द्वारा उन पर शासन करने के लिए प्रयोग किए जाते थे। इस प्रकार के विवरण अध्ययन किए जा रहे लोगों को 'रोचक नमूनों' के रूप में प्रस्तुत करते थे। मेयर फोर्टेस और ई.ई इवांस–प्रिचर्ड जैसे अनेक मानवशास्त्रियों को प्रशासकों के लाभार्थ आँकड़े एकत्र करने के लिए राज्य के कर्मचारियों के रूप में क्षेत्र में भेजा गया था। बहरहाल, ये लोगों के प्रति दयालु रहे और इससे अधिक नहीं सोचते थे कि उन्हें अपनी–अपनी सरकारों का सहयोग ही करना है। वास्तव में उत्तर–औपनिवेशिक काल में अनेक मानवशास्त्रियों ने राज्य को वह सूचना प्रदान करने की जिम्मेदारी से हाथ खींच लिया जिसे उनके द्वारा अध्ययन किए गए लोगों पर शासन करने के लिए प्रयोग किया जा सकता था। यह बड़ी रोचक बात है कि राज्य की महत्वाकांक्षा का पोषण करने की बजाय उनमें से अनेक विद्वान अपने अध्ययनाधीन लोगों के लिए प्रवक्ताओं के रूप में उभरे और उन्होंने उनका पक्ष सरकार के सामने रखा।

यहाँ ध्यान देना आवश्यक है कि उत्तर–औपनिवेशिक काल में मूल निवासियों को अब 'रोचक नमूनों' के रूप में अवैयक्तिक ढंग से नहीं देखा जाता है। इससे उस रीति में परिवर्तन आया है जिससे नृवंशविज्ञान का समझा जाता है। जबकि पहले नृवंशविज्ञान को विस्तृत विवरण वाले एक भौतिक दस्तावेज के रूप में एक उत्पाद मानकर देखा जाता था, अब इसे एक विधि के रूप में लिया जाता है। बाह्य और असंबद्ध 'वैज्ञानिक' व्याख्या की दृष्टि से नृवंशविज्ञान काफी आकर्षक गद्य होता है, जिसमें शोधकर्ता लोगों के जीवन और क्रियाकलापों में शामिल होता है। लोगों के जीवन के साथ निकटता से जुड़े रहने के दौरान वह दूसरों के दृष्टिकोण की व्याख्या का मूल्यांकन करने और उसे आगे बढ़ाने के लिए आता है। इस प्रक्रिया ने अन्य संस्कृतियों की समझ के प्रति एक अधिक मानवीय दृष्टिकोण को संभव बनाया है।

बॉक्स 9.1 नृवंशविज्ञान – विधि और उत्पाद (बेरेमैन, 2004)

'नृवंशविज्ञान' को परस्पर क्रिया करने वाले लोगों के किसी समूह के व्यवहार तथा उनकी अंतर्निहित मान्यताओं, सहमतियों, मनोभावों एवं मूल्यों को संक्षेप में कहती एक लिखित 'मानवजाति वर्णन' रूपी रिपोर्ट कहा जा सकता है। तदनुसार, नृवंशविज्ञान किसी समाज के रहन–सहन अथवा संस्कृति का विवरण होता है। वह हर व्यक्ति जो सांस्कृतिक अथवा सामाजिक मानव विज्ञान में अनुभवजन्य शोध करता है, एक प्रक्रिया स्वरूप नृवंशविज्ञान में

लिप्त होता है, हालाँकि कोई भी व्यक्ति अपने शोध को किसी भी प्रकार नृवंशविज्ञान के रूप में प्रस्तुत नहीं करता। किसी भी नृवंशविज्ञान से यह अपेक्षित होता है कि वह गद्य प्रतिपादन में नृवंशविज्ञान शोध में अंतर्निहित सीमाओं में रहकर उन लोगों की संस्कृति का समग्र दृश्य प्रस्तुत करे जिनके विषय में वह लिखा गया हो। इसी रूप में यह किसी दिए गए समाज की संस्कृति के सभी पहलुओं को समेटने का प्रयास करता है। व्यवहारतः यह उन पहलुओं को समेटता है जो नृवंशविज्ञानशास्त्री अपनी अध्ययनाधीन संस्कृति के मुख्य अभिलक्षणों को समझे जाने के लिए उपयुक्त मानता हो (पृष्ठ 157)। ...

प्रस्तुतिकरण और विश्लेषण की विधि जो भी हो, नृवंशविज्ञान का उद्देश्य अध्ययन की गई संस्कृति का विवरण पर्याप्त गहराई और विस्तार के साथ प्रस्तुत करना होता है ताकि वह व्यक्ति जिसने अनुभव नहीं किया है, उसे समझ सके। यदि पाठक जान लेता है कि उस संस्कृति में सहभागी स्वयं को, दूसरों को व अपने पर्यावरण को कैसे देखते हैं और वे प्रत्येक के साथ कैसे व्यवहार करते हैं तो माना जाता है कि वह समझ हासिल कर ली गई है। आदर्श रूप में, यहाँ अपेक्षित होगा कि नृवंशविज्ञानशास्त्री मात्रा, विविधता, और गुणवत्ता में यथेष्ट सूचना दे, जो कि इस भाँति सुव्यवस्थित एवं विश्लेषित हो कि यदि पाठक को उस संस्कृति की घटनाओं का अनुभव करना हो, उस समाज के सदस्यों द्वारा अनुभूत घटनाओं के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं का पूर्वानुमान करना हो, और अंततोगत्वा उस संस्कृति में रह चुके किसी व्यक्ति की भाँति ही उस समाज में यथोचित ढंग से व्यवहार करना हो तो वह उन घटनाओं को समझ सके। इस लिहाज से नृवंशविज्ञान किसी भाषा संबंधी एक भाषाविद् के वर्णन सदृश ही होता है। यह संभवतः पाठक को वह भाषा सरलता से बोल पाने में सक्षम न करे, उसे यह समझने में सक्षम अवश्य कर देता है कि वह कैसे असर करती है। नृवंशविज्ञान में अनिवार्यतः एक नियमावली संबंधी प्रकथन होता है, जो कि बताता है कि उनकी संस्कृति में लोग कैसे काम करते हैं। समय दिए जाने पर एक उपयुक्त विज्ञान संबंधी (अथवा भाषायी) विवरण का पाठक समझ सकता है कि क्या किया (अथवा कहा) जाता है, उस संस्कृति (अथवा भाषा) में सही और सार्थक रूप से आचरण कर (अथवा बोल) सकता है, उन प्रतिक्रियाओं की अपेक्षा कर सकता है जो उन्हें प्रत्युत्तर दे सकती हों जिन्हें वे उचित मानते हों (पृष्ठ 159)।

नृवंशविज्ञान विधि अपनाने वाले अध्ययन के कुछ विशिष्ट अभिलक्षण निम्नवत् हैं। प्रथम, यह उन आँकड़ों पर आधारित होता है जो शोधकर्ता ने लोगों के साथ यथासंभव समय बिताकर एकत्र किए होते हैं। आदर्श रूप में यह अवधि कम से कम एक वर्ष हो सकती है। शोधकर्ता आँकड़े एकत्र करने के लिए सहभागी प्रेक्षण विधि अपनाता है। वह लोगों के दैनिक जीवन में सहभागी बनता है, यथा उनके साथ निरंतर अंतर्संबंध कायम करता है, और प्रेक्षण एवं साक्षात्कार में भाग लेता है। इनको सर्वेक्षण जैसी आँकड़ा संग्रहण की अन्य तकनीकों के साथ संयोजित कर दिया जाता है। नृवंशविज्ञान संबंधी वृत्तांत प्रायः इस बात का प्रचुर विवरण प्रदान करता है कि क्षेत्र कार्य कैसे किया गया और आँकड़े कैसे एकत्र किए गए। दूसरे, नृजातीय वृत्तांत लोगों के दृष्टिकोण पर आधारित होते हैं। आँकड़ों की व्याख्या अध्ययनाधीन लोगों के स्थानीय संदर्भ में ही की जाती है। शोधकर्ता अपनी राय रखने से दूर ही रहता है।

क्षेत्र कार्य, विशेष रूप से नृवंशविज्ञान विधि के प्रयोग, का श्रेय ब्रॉनीस्लाव मालिनोवस्की को दिया जाता है। चलिए, जानते हैं कि मालिनोवस्की ने शोध में नृवंशविज्ञान विधि का प्रयोग कैसे किया। बहरहाल, उससे पहले नीचे दिए गए बोध प्रश्न हल कर लेते हैं।

बोध प्रश्न 1

1. 'विधि के रूप में नृवंशविज्ञान' और 'उत्पाद के रूप में नृवंशविज्ञान' से आप क्या समझते हैं?

   .....
   .....
   .....
   .....
   .....
   .....

2. नृवंशविज्ञान शोध के कोई तीन विशिष्ट अभिलक्षण लिखें।

   .....
   .....
   .....
   .....
   .....
   .....

9.3 क्षेत्र कार्य में नृवंशविज्ञान विधि कैसे प्रयोग करें?

जैसा कि हमने ऊपर पढ़ा, सन 1900 के पूर्वार्ध से पूर्व, विभिन्न संस्कृतियों के विषय में जानकारी मिशनरियों, यात्रियों व अन्य लोगों द्वारा एकत्र की जाती थी, जो कि विधिवत् क्षेत्र कार्य करने के लिए प्रशिक्षित नहीं होते थे। वह उद्देश्य जिससे सूचना एकत्र की जाती थी, अधिकतर प्रशासकों द्वारा शासन की सहूलियत होता था, न कि समग्रता में संस्कृति और समाज को समझना। यह ब्रॉनिस्लाव मालिनोवस्की ही थे जिन्हें पहली बार नृवंशविज्ञान विधि का प्रयोग कर क्षेत्र कार्य करवाने का श्रेय दिया जाता है। आइए, बॉक्स 9.2 से मालिनोवस्की की सामाजिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि जानें।

बॉक्स 9.2 मालिनोवस्की की सामाजिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि

ब्रॉनिस्लाव मालिनोवस्की का जन्म वर्ष 1884 में एक पोलिश कुलीनतंत्रीय परिवार में हुआ। उसने गणित, भौतिकी और दर्शनशास्त्र का अध्ययन पोलैंड के क्राको स्थित जगियेलोनियन विश्वविद्यालय में रहकर किया। लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड पॉलिटिकल साइंस में फ्रेजर के विषय में पढ़ने के बाद उसे मानवशास्त्र विषय लेने की प्रेरणा मिली। उसे न्यू गिनी में क्षेत्र शोध करवाने के लिए वित्तीय मदद प्राप्त हुई, परंतु ऑस्ट्रेलिया में उसके प्रवास के दौरान ही विश्वयुद्ध छिड़ गया। बहरहाल, ऑस्ट्रेलिया में कानूनन एक 'शत्रु' होते हुए भी वह युद्ध की अवधि में ऑस्ट्रेलियाई सरकार को अपनी गतिविधियों की रिपोर्ट पेश करने तक प्रशांत द्वीपसमूह पर स्वच्छंद घूमने में सक्षम रहा। उसका सबसे प्रसिद्ध शोध ऑस्ट्रेलिया के उत्तर–पूर्वी तट पर मेलानेशिया स्थित ट्रोब्रिएंड द्वीपसमूह में किया गया (ओ' रेली 2005: 7)।

जब बाहरी दुनिया से कटा मालिनोवस्की ट्रोब्रिएंड द्वीपसमूह में फँसा था तो उसके सामने एक ही विकल्प था – मूल निवासियों की भाषा सीखे और उनके साथ घनिष्ठता का व्यवहार बनाए। अन्ततः उसने उनके व्यवहार, मान्यताओं, मूल्यों, रीति–रिवाजों और दैनिक जीवन संबंधी समझ विकसित की। यहाँ नृवंशविज्ञान विधि के प्रयोग में तीन महत्वपूर्ण बिंदु

सामने आए। इनमें प्रथम भाषा सीखना ही है। इस लिहाज से कि शोधकर्ता अध्ययनाधीन लोगों के साथ अंतर्क्रिया कर सके, उसे उनकी भाषा का कामचलाऊ ज्ञान होना ही चाहिए। इससे संचार में मदद मिलती है और शोधकर्ता उनकी अपनी भाषा में लिखे दस्तावेज (जैसे पत्र, डायरी, व्यक्तिगत अभिलेख) समझ पाता है।

दूसरे, एक लम्बी समयावधि तक लोगों के साथ रहना। परंपरागत रूप से शोधकर्ताओं को कम से कम एक वर्ष तक क्षेत्र में रहने की सलाह दी जाती थी, जिस दौरान वह लोगों के साथ रहता और उनकी गतिविधियों में भाग लेता। लोगों के क्रियाकलाप में गहनतापूर्वक भाग लेते समय शोधकर्ता को उनसे मानसिक दूरी बनाए रखना याद रहे, यथा वह उनसे इतना न घुलमिल जाए कि अपने शोधकार्य से ही शून्यचित्त हो जाए। उससे अपेक्षित होगा कि वह क्षेत्र कार्य में 'उपांतिक मूल निवासी' की प्रस्थिति ग्रहण करे। आपको भाषा भी सीखनी है, उन लोगों के साथ रहना भी है, उनकी गतिविधियों में भाग भी लेना है, जिस पर भी आपको उनसे एक मानसिक दूरी बनाकर रखनी है। शोधकर्ता का मस्तिष्क लोगों के मामलों के प्रति जागरूक रहता है और साथ ही उनमें पूरी तरह लिप्त होने से बचता है ताकि कहीं उसकी अपनी पहचान ही लुप्त न हो जाए।

तीसरे, अपनी राय थोपने से बचना और अध्ययनाधीन लोगों की संस्कृति के प्रति सम्मान दर्शाना। शोधकर्ता से अपेक्षित है कि वह प्रजाति केंद्रिकता से बचे, यथा अपने पूर्वाग्रह और अध्ययनार्थ लोगों व उनकी संस्कृति से स्वयं को और अपनी संस्कृति को मानने के भाव को त्याग दे। शोधकर्ता को लोगों के किसी ऐसे व्यवहार एवं प्रथा को देखकर अपने आश्चर्य और कभी–कभी आघात पर नियंत्रण रखना होगा जो उसके अपने व्यवहार एवं प्रथा से भिन्न हो। उन लोगों के सामने अपने घृणा, क्रोध, आघात आदि भाव प्रदर्शित करने से बचना होगा। किसी भी कीमत पर आपको सांस्कृतिक सक्रियतावाद का मनोभाव अपनाना होगा, यथा स्थानीय संस्कृति और रहन–सहन के प्रति स्वीकार्यता एवं सम्मान का भाव। वास्तव में, ऐसा आचरण शोधकर्ता को उन लोगों के साथ सरलता एवं शीघ्रता से घनिष्ठता कायम करने में मदद करता हैं। अनेक अवसरों पर यह देखा गया है कि अध्ययनाधीन लोगों द्वारा शोधकर्ता को किसी विशिष्ट परिवार के सदस्य के रूप में ही लिया जाता है। उनमें से कुछ ने तो कबीले का नाम ही अपना लिया है या फिर स्थानीय कौशल अर्जित कर लिया है (उदाहरणार्थ, टोकरियाँ बनाने की कारीगरी)।

चौथे, इस संदर्भ में आँकड़े एकत्र करना। मालिनोवस्की इस बात पर बल देते हैं कि लोगों से आँकड़े उनके वास्तविक प्रतिवेश में ही एकत्र किए जाएँ। उनके संदर्भ में होने पर ही कोई शोधकर्ता इस बात को गहराई से समझ सकता है कि लोग अपने रोजमर्रा के जीवन में मामले कैसे निबटाते हैं और कैसे उनका अनुभव करते हैं। साथ ही, लोग जो कहते हैं कि वे करते हैं अथवा वे मानदंड जिनका वे पालन करते हैं, सदा एक ही प्रकार से नहीं अपनाए जाते। केवल जब शोधकर्ता लोगों से आँकड़े उनके वास्तविक प्रतिवेश में एकत्र करता है, यह देखना संभव होता है कि क्या जैसा लोग कहते हैं कि वे व्यवहार करते हैं और वह रीति जिसमें वे वस्तुतः ऐसा करते हैं, कोई विसंगति दर्शाते हैं।

पाँचवे, संदर्भ और वह रीति जिससे नृवंशविज्ञान विधि का प्रयोग किया गया हो, स्पष्टता एवं विस्तार के साथ लिखे जाएँ। मालिनोवस्की का कहना है कि शोधकर्ता को अपनी विधि का वर्णन ठीक वैसे करना चाहिए जैसे कि कोई वैज्ञानिक किसी प्रयोग की दशाएँ स्पष्ट

करता है। किसी विशिष्ट शोध में प्रयुक्त नृवंशविज्ञान विधि का वर्णन उत्तरवर्ती शोधकर्ताओं को यह समझने में सक्षम करते है कि कौन–सी कठिनाइयाँ एवं चुनौतियाँ सामने आईं और उनसे कैसे निपटा गया, आँकड़े विशेष एकत्र करने की वजह क्या रही तथा यह कैसे किया गया।

मालिनोवस्की ने स्वयं को ''नैत्यिक जीवन की असंभाव्यता'' का अध्ययन करने के प्रति समर्पित कर दिया, जो कि उनकी पुस्तक *अर्गोनॉट्स ऑफ द वैस्टर्न पैसिफिक* में भली भाँति स्पष्ट किया गया है। इस पुस्तक की गिनती अब नृवंशविज्ञान संबंधी उत्कृष्ट साहित्य में होती है। अनेक नृवंशविज्ञानशास्त्रियों ने मालिनोवस्की की नृवंशविज्ञान विधि को अपनाया है और अपने मानवजाति वृत्तांतों को *अर्गोनॉट्स ऑफ द वैस्टर्न पैसिफिक* के स्वरूप में ही प्रस्तुत किया है। सारतः, मालिनोवस्की द्वारा स्थापित क्षेत्र कार्य की परंपरा और जो मानवजाति वर्णन के नाम से किसी संस्कृति का संपूर्ण वर्णन प्रस्तुत करने के लिए अनिवार्य है, स्थानीय संस्कृति में शोधकर्ता के दीर्घावधिक निमज्जन की अपेक्षा करते हैं। यह महज प्रेक्षण से भिन्न होता है क्योंकि एक अनौपचारिक प्रेक्षक प्रेक्षण के अधीन स्थिति से मानसिक रूप से पृथक्त हो सकता है।

9.4 नृवंशविज्ञान विधि के प्रयोग में आविर्भावी प्रवृत्तियाँ

नृवंशविज्ञान विधि के शुरूआती दौर व्यावहारिकता (functionalism) में दिखाई दिए। व्यावहारिकता का आधार था – जैव सादृश्य, जो कि समाज की एक समकालिक तस्वीर प्रस्तुत करता था। इसके केन्द्र में होता था – वह जो वर्तमान में हो रहा है, न कि वह जो अतीत में हो चुका है। दूसरा केंद्र बिंदु था – सामान्य भावत्व स्वरूप सामंजस्य। हर संस्कृति को उसके अपने तरीके से अनन्य एवं क्रियाशील तथा अपनी समग्रता में अध्ययनार्थ आज्ञाकर माना जाता था। यह ध्यान देने की बात है कि व्यावहारिता एक सैद्धांतिक एवं क्रियाविधिक परिप्रेक्ष्य है, जो कि समाज को एक अंतर्संबद्ध अवयवों की व्यवस्था के रूप में देखता है। ये अंतर्संबद्ध अवयव समाज की स्थिरता में योगदान देते हैं। व्यावहारिकता किसी प्रथागत अथवा सांस्कृतिक अभिलक्षण को उसके प्रकार्यों अथवा समाज में उसकी भूमिका के लिहाज से स्पष्ट करने का प्रयास करती है। अपनी पुस्तक *अर्गोनॉट्स ऑफ द वैस्टर्न पैसिफिक* में मालिनोवस्की ने सामाजिक संरचना की स्थिरता एवं अनुरक्षण में जादुई और धार्मिक संस्कारों की भूमिका स्पष्ट की है। नृवंशविज्ञान विधि के प्रयोग से लेखक ने पाया कि जादू अनिश्चितता और भावात्मक व्यग्रता की दशाओं में व्यग्रता कम करने का काम करता था और लोगों के बीच आशा एवं विश्वास का संचार कर देता था। मालिनोवस्की को नृजातीय आँकड़ों का विश्लेषण करने की प्रेरणा व्यावहारिकता के परिप्रेक्ष्य से ही मिली।

हाल के वर्षों में संसार की यथार्थता के संबंध में व्यापक दार्शनिक परिवर्तनों के साथ नृवंशविज्ञान विधि भी वस्तुपरक विधि से बदलकर काफी हद तक व्यक्तिपरक विधि हो गई है, जिसमें शोधकर्ता आँकड़ों की व्याख्या अपनी आत्मीयता के आलोक में करने लगा है। बहरहाल, शोधकर्ता के लिए यह आवश्यक होता है कि सूचनादाताओं की बात समझ में आने देने के लिए अपनी व्यक्तिपरक स्थिति भी प्रकट करे और 'आख्यान' (यथा, लोगों के व्यक्तिगत लेखा–जोखा) पर भी ध्यान दे। तदनुसार, अब हम यह मानकर नहीं चलते कि किसी संस्कृति में रहने वाले लोगों के अनुभव एक–से होंगे और उनका जीवन एक समान

होगा। आधुनिक काल में नृवंशविज्ञान विधि इस विचार का समावेश करके चलती है कि विभिन्न लोग वास्तविकता संबंधी अपना–अपना वृत्तांत कहते हैं। हर व्यक्ति के वृत्तांत को प्रामाणिक माना जाता है। यह ध्यान रखा जाता है कि आँकड़े समाज के सभी खंडों का प्रतिनिधित्व करें, न कि कुछ विशेषाधिकारप्राप्त खंडों, मुख्य सूचनादाताओं का ही। मुख्य सूचनादाताओं का चयन करने में भी सावधानी रखी जाए क्योंकि प्रेक्षण के अधीन सामाजिक वास्तविकता वाले विभिन्न खंड होंगे।

पहले समुदाय अस्पष्ट तौर पर लोगों के किसी ऐसे समूह को कहा जाता था जो किसी सार्वजनिक राज्य क्षेत्र में रहता हो और एक ही संस्कृति अपनाता हो। आधुनिक काल में, बहरहाल, किसी समुदाय के लोग देश के विभिन्न भागों में और यहाँ तक कि विश्व के विभिन्न भागों में भी प्रवास कर जाते हैं। अतएव, उदाहरण के लिए, जब कोई शोधकर्ता संथालों का नृजातीय अध्ययन करना चाहता है तो उसे मानवजाति वर्णन प्रस्तुत करने के लिए देश के विभिन्न भागों में और यहाँ तक कि विदेश भी जाना पड़ सकता है। अनेक स्थानों पर जाकर नृजातीय अध्ययन कराने का यह उद्यम 'बहुस्तरीय नृवंशविज्ञान' कहलाता है। अब कभी–कभी ऐसे सभी स्थानों पर जाना संभव नहीं होता जहाँ संथाल प्रवास कर गए हों। ऐसी स्थिति में शोधकर्ता आँकड़े एकत्र करने के लिए डिजिटल माध्यम अपना सकता है (जैसे कंप्यूटर, स्मार्ट फोन आदि)। नृवंशविज्ञान विधि में डिजिटल माध्यमों के प्रयोग से एक नई विधा सामने आई है, जिसे 'डिजिटल नृवंशविज्ञान' कहा जाता है।

डिजिटल नृवंशविज्ञान हेतु आँकड़ों को मुख्यतः ऑनलाइन प्रश्नावली, डिजिटल वीडियो, सोशल नेटवर्किंग, वेबसाइट्स और ब्लॉग्स के माध्यम से एकत्र किया जाता है। आइए, इन पर कुछ विस्तार से चर्चा करें।

ऑनलाइन प्रश्नावली : शोधकर्ता आँकड़े एकत्र करने के लिए प्रश्नावली की तकनीक का प्रयोग काफी पहले से करते आए हैं। प्रश्नावली प्रायः छपी होती है और उत्तरदाताओं को डाक द्वारा भेजी जाती है। अब कंप्यूटर के आगमन और ईमेल के माध्यम से संचार की अर्जित दक्षता के साथ प्रश्नावली ईमेल से भेजी जा सकती है। आधुनिक काल में, बहरहाल, प्रश्नावली आयोजन सेवाएँ (जैसे सर्वे मंकी) आसानी से उपलब्ध हैं। ये सेवाएँ वेब–आधारित प्रश्नावली को अभिकल्प, प्रसारित और विश्लेषित करना सरल बना देती हैं। ऑनलाइन प्रश्नावली आसानी से स्टोर और जल्दी से रिट्रीव की जा सकती है। (भले ही प्रश्न संख्या बहुत बड़ी हो)। इसके अलावा, इन्हें सुविधापूर्वक मात्रात्मक विश्लेषण के अधीन लाया जा सकता है क्योंकि इस डेटा को विश्लेषण के लिए SPSS अथवा किसी अन्य पैकेज में एक्सपोर्ट करना संभव होता है। इसके साथ ही, ऑनलाइन प्रश्नावली की पहुँच वैश्विक होती है।

युवा वर्ग द्वारा मोबाइल फोन के प्रयोग पर एक ऑनलाइन प्रश्नावली के मामले पर विचार करें। अब, अध्ययन के कार्यक्षेत्र पर निर्भर करते हुए, ऑनलाइन प्रश्नावली युवक–युवतियों को देश के विभिन्न भागों के साथ–साथ विश्व के अनेक भागों में भी भेजी जा सकती है। यह पाया गया है कि उत्तरदाता उत्तर देने के व्यक्तिगत आग्रह के साथ अपने मित्रों एवं परिचितों को प्रश्नावली तुरंत मेल कर देते हैं, इससे हमारे अध्ययन का डेटा–बेस विस्तीर्ण होता है। वास्तव में, फिल्टर का प्रयोग कर नमूने से प्रतिबंधित आँकड़ों का प्रयोग किया जा सकता है। आइए, अब युवा वर्ग द्वारा मोबाइल फोन के प्रयोग विषयक अध्ययन के

उदाहरण पर वापस चलते हैं। यदि कोई शोधकर्ता अपने विश्लेषण को दक्षिण एशिया की महिला उत्तरदाताओं तक ही सीमित रखना चाहता हो तो वह फिल्टर का प्रयोग कर बड़े डेटा सेट से दक्षिण एशिया की महिलाओं से संबंधित आँकड़े चुन सकता है।

डिजिटल वीडियो : कई बार लोग अपने वीडियो भिन्न–भिन्न साइट्स पर अपलोड करते हैं। ये वीडियो किसी सामाजिक स्थिति अथवा किसी वास्तविक प्रतिवेश में होने वाली किसी घटना अथवा कैमरे के सामने चला कोई कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। दोनों ही स्थितियों में डिजिटल वीडियो शोधकर्ताओं के लिए आँकड़ों का एक समृद्ध स्रोत उपलब्ध कराते हैं। यदि वे प्राकृतिक परिवेश में किसी सामाजिक स्थिति को दर्शाते हों तो शोधकर्ता यह समझ विकसित कर लेता है कि वह कैसी होती है; यदि स्थिति कैमरे के सामने प्रस्तुत की जाती है तो शोधकर्ता यह समझ विकसित कर लेता है कि लोगों के लिए क्या महत्वपूर्ण है, वह क्या है जो वे दर्शाना चाहते हैं। बहरहाल, शोधकर्ता को काफी सावधान रहना पड़ता है और डिजिटल वीडियो में दर्शाई जाने वाली विषय–वस्तु को उचित संदर्भ में रखना होता है, अन्यथा आँकड़े दिग्भ्रमित कर सकते हैं।

सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स : शोध को सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स के प्रयोग से समृद्ध किया जा सकता है। ये साइट्स उन लोगों को एक बड़ा डेटा–बेस उत्पन्न कर देती हैं जो पास से अथवा दूर से सामान्य हित साझा करते हैं। फेसबुक जैसी सोशल नेटवर्किंग साइट्स दर्शाती हैं कि लोग किस प्रकार अपने व्यक्तिगत विवरण प्रस्तुत करते हैं, जो कि बड़ी संख्या में लोगों के लिए उपलब्ध होते हैं ताकि वे उन पर चर्चा कर सकें, उन पर टीका–टिप्पणी कर सकें, उनका उपहास कर सकें अथवा उन्हें ट्रॉल कर सकें। ये विवरण शोधकर्ताओं द्वारा प्रयोग कर लिए जाते हैं। आइए, बॉक्स 9.3 से जानें कि नृवंशविज्ञानशास्त्रियों के लिए सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स कैसे उपयोगी हो सकती हैं और इसमें क्या कठिनाइयाँ आ सकती हैं।

बॉक्स 9.3 शोधकर्ताओं के लिए सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स के लाभ और हानियाँ

सोशल नेटवर्किंग साइट्स विशेष रूप से नृवंशविज्ञानशास्त्रियों के लिए निम्नलिखित तरीकों से उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं –

1) उन 'मित्रों' की कड़ियों के साथ ये आभासी 'द्वारपाल' होती हैं जो संभावित शोध के उत्तरदाता हो सकते हैं;

2) इनमें समूहों के सर्वाधिक सीमांत सामाजिक आंदोलनों तक के विषय में मल्टी–मीडिया सामग्री का अथाह भंडार होता है;

3) नृवंशविज्ञानशास्त्री इस प्रकार के नृजातीय आँकड़ों को बटोरते हुए जो पहले अनुपलब्ध रहे हैं, अदृश्य रहकर पेज मेम्बर्स की सामाजिक अंतर्क्रियाओं का प्रेक्षण कर सकता है;

4) ऑनलाइन शोध करवाने के सुव्यक्त उद्देश्य से सामाजिक शोधकर्ताओं द्वारा पेज बनाए जा सकते हैं (जैसे – अध्ययनार्थ समूह कोई सन्निहित वीडियो देखते हैं और उस पर कमेंट करते हैं);

5) वेबसाइट्स पर संबंधों की संरचना अपने आप में एक उपयोगी शोध विधि है, जहाँ गार्टन व अन्य (1999: 78) के अनुसार विषय–वस्तु, दिशा और मित्रता की शक्ति फलदायी उपागम बन जाते हैं; तथा

6) जनसामान्य तक उपयोगी सूचना पहुँचाने के लिए सामाजिक शोधकर्ताओं द्वारा पेज तैयार किए जा सकते हैं, जो कि 'क्योर डायबिटीज' माईस्पेस पेज बनाने वालों द्वारा अपनाया गया एक उपागम था (बार्स्की एवं पर्डन, 2006)।

यद्यपि यह सब बड़ा ही आकर्षक लगता है, इन शोध विकल्पों की कमी यह है कि इन समुदायों की सदस्यता डिजिटल वंचित समूह (have nots) के लिए प्रतिबंधित है और नृजातीय/लिंग डिजिटल डिवाइड इस विषय पर सशक्त रूप से अटल है। इन अंतरालों अथवा अभावों को स्वीकार कर सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स के माध्यम से किया गया शोध उन परियोजनाओं के लिए ही उपयुक्त रहता है जिनके उत्तरदाता अपेक्षित प्रौद्योगिकियों से परिचित हों अथवा उनमें प्रशिक्षित किए जा सकते हों। इस कथन के साथ, अध्ययनार्थ समूहों के लिए सामाजिक नेटवर्किंग साइट्स का प्रयोग, उदाहरण के लिए, उन लोगों के वर्धित समावेश में परिणत हो सकता है जो अक्षम (चलना–फिरना और अन्यथा) हों तथा उन समूहों के समावेश में भी जो असुरक्षित हों अथवा अन्यथा उन तक पहुँचना दुष्कर हो (मूर्ति, 2008: 844–845)।

ब्लॉग : कई लोग नियमित रूप से ब्लॉग लिखते हैं। ये ब्लॉग दूसरों लोगों द्वारा पढ़े जाते हैं और उन पर टिप्पणियाँ की जाती हैं। ब्लॉग किसी व्यक्ति का दृष्टिकोण और उस पर अन्य लोगों की प्रतिक्रिया को प्रस्तुत करते हैं। शोध में ब्लॉग्स का प्रयोग आँकड़ा संग्रहण और व्याख्या के प्रमुख साधन के रूप में काम कर सकता है। बहरहाल, इसे अलग से प्रयोग करने की बजाय अन्य स्रोतों के साथ ही प्रयोग किया जाना श्रेयस्कर होगा।

बोध प्रश्न 2

1. 'बहुस्तरीय' नृवंशविज्ञान क्या है? स्पष्ट करें।

   .....
   .....
   .....
   .....
   .....
   .....

2. डिजिटल नृवंशविज्ञान में प्रयुक्त आँकड़ा संग्रहण के प्रमुख स्रोत बताएँ।

   .....
   .....
   .....
   .....
   .....
   .....

9.5 नृवंशविज्ञान विधि के गुण–दोष

जैसा कि अब तक हमने समझा, नृवंशविज्ञान विधि में एक दीर्घीकृत समयाविधि तक अध्ययनाधीन लोगों के साथ गहन अंतर्क्रिया का समावेश होता है। इसके कुछ लाभ भी हैं तो कुछ हानियाँ भी। आइए, नृवंशविज्ञान विधि के गुण–दोषों पर चर्चा करें – पहले गुण, फिर दोष।

नृवंशविज्ञान विधि के गुण : नृवंशविज्ञान विधि के प्रयोग ने समय के साथ अपना महत्व बढ़ाया ही है, न कि घटाया। सूचना या जानकारी की गहराई और प्रामाणिकता जो लोगों के साथ रहकर और यथासंभव उनकी दैनिक गतिविधियों में भाग लेकर प्राप्त की जा सकती है, किसी भी अन्य विधि से हासिल नहीं हो सकती।

साथ ही, नृवंशविज्ञान विधि का प्रयोग कर शोधकर्ता किन्हीं लोगों की संस्कृति एवं उनके व्यवहार को उनके ही संदर्भ में समझ पाने में सक्षम होता है। शोधकर्ता अपने अध्ययनाधीन लोगों के साथ सहानुभूति रखने लगता है और अन्य संस्कृतियों के प्रति आदरभाव भी रखने लगता है। यह सहानुभूति न सिर्फ अध्ययन किए जा रहे लोगों व उनकी संस्कृति के सही बोध और मूल्यांकन की ओर प्रवृत करती है, बल्कि जीवन में अन्य मुद्दों से जूझने के कहीं अधिक मानवीय तरीके भी सुझाती है। इसके अलावा, जैसा कि प्रसिद्ध मानवशास्त्री लेवी–स्ट्रॉस बताते हैं, नृवंशविज्ञान विधि का प्रयोग हमें सतह से नीचे सामाजिक परिघटना के अंतर्संबंधों के कहीं गहरे स्तरों तक देख पाने में सक्षम करता है। चलिए, वर्षा के आह्वान हेतु अध्ययनाधीन लोगों द्वारा एक सामूहिक नृत्य का उदाहरण लेते हैं। अब, नृत्य देखने वाले हर व्यक्ति के लिए मुख्य मुद्दा होगा कि नृत्य करने से वर्षा होती है अथवा नहीं। नृवंशविज्ञान विधि का प्रयोग करने वाले शोधकर्ता के लिए यह मुद्दा अधिक महत्व का नहीं होगा। नृत्य करने से वर्षा हुई अथवा नहीं, यह ज्ञात किए जाने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होगा – सामूहिक नृत्य में क्या प्रकार्य किया गया और लोगों ने इसे उससे कैसे जोड़ा। सामूहिक नृत्य से समाज में एकजुटता और सामंजस्य को बल मिला होगा; इससे नर्तकों अथवा दर्शकों के रूप में शत्रु एक जगह आ गए होंगे; अथवा इससे लोगों के सामाजिक संगठन का प्रकटन हुआ। व्यक्ति जितना अधिक लोगों के साथ रहता है, उतना ही अधिक वह गहराई से जान पाता है कि वे कैसे अपने काम करते हैं और कैसे वे संसार से जुड़े हैं। इस प्रक्रिया के माध्यम से ही नृवंशविज्ञानशास्त्री विभिन्न विश्व तत्वों और सिद्धांतों को गहराई से जान सके हैं। अब वे जान चुके हैं कि लिंग–निर्धारण के कई अन्य तरीके भी हैं, पुरुषों और महिलाओं को विभिन्न संस्कृतियों में भिन्न–भिन्न तरीके से लिया जाता है; तथा मृत्यु को अनेक रूपों में समझा जा सकता है।

नृवंशविज्ञान विधि के दोष : कभी यह माना जाता था कि समाज अनेक अवयवों का संगठन होता है और नृवंशविज्ञानशास्त्री का मुख्य उद्देश्य समाज के विभिन्न पहलुओं के बीच अंतर्संबंध दर्शाना होता है। यदि यह सत्य होता तो किसी भी नृवंशविज्ञानशास्त्री का वृत्तांत बिल्कुल किसी भी अन्य नृवंशविज्ञानशास्त्री के वृत्तांत जैसा ही होता। तब सामाजिक व्यावहारिकता की अनिवार्यतः केवल एक ही व्याख्या होती और अनिवार्यतः एक ही 'सत्य' होता। किंतु शीघ्र ही इस तरह का कथन गलत सिद्ध हो गया। यहाँ प्रसिद्ध उदाहरण मार्गरेट मीड–डेरेक फ्रीमैन के निष्कर्षों के विपरीत रहे, जो कि उसी क्षेत्र में नृजातीय अध्ययन करके प्राप्त हुए थे। परवर्ती का कहना था कि मीड ने जो कुछ भी बताया था,

सामोआवासियों की निष्पक्ष तस्वीर नहीं दर्शाता था, बल्कि उसे एक युवा छात्रा के रूप में अपने विचारों से रंग दिया गया था। तदंतर शीघ्र ही यह आम सहमति बनी कि नृवंशविज्ञान शोध कभी भी निष्पक्ष नहीं हो सकता और ऐसी संपूर्ण जानकारी नहीं दे सकता जो प्रेक्षक के व्यक्तिगत विचार से मुक्त हो। इसके साथ ही, नृवंशविज्ञान विधि समय बहुत लेती है। यहाँ यह भी संभावना होती है कि नृवंशविज्ञानशास्त्री को लोगों द्वारा स्वीकार ही न किया जाए अथवा उसे क्षेत्र विशेष में गहन क्षेत्रकार्य करने की अनुमति ही न मिले। इसके पीछे अनेक कारण हो सकते हैं, जैसे शोधकर्ता और अध्ययनार्थ लोगों के बीच वैचारिक मतभेद तथा शोधकर्ता के लिए उनका नितांत घृणा का भाव।

9.6 सारांश

इस इकाई में हमने नृवंशविज्ञान विधि पर चर्चा की। हमने शुरुआत यह समझाते हुए की कि नृवंशविज्ञान क्या है। हमने चर्चा की कि नृवंशविज्ञान अध्ययन कैसे करवाया जाता है। तदंतर हमने नृवंशविज्ञान विधि पर ध्यान केंद्रित किया। नृवंशविज्ञान विधि के प्रयोग में ध्यान रखी जाने वाली मुख्य बातों पर व्यापक चर्चा की गई। अंत में हमने नृवंशविज्ञान शोध में उभरते नए रुझानों पर चर्चा की।

9.7 संदर्भ

Berrememan, Gerald D. 2004. "Ethnography: Method and Product", *Methodology and Fieldwork*, edited by Vinay Kumar Srivastava, New Delhi: Oxford University Press.

Hammersely, M. and P. Atkinson. 1995. *Ethnorgraphy: Principles in Practie*, London: Routledge.

Malinowski, Bronislaw. 1922. *Argonauts of the Western Pacific*, London: Routledge and Kegan Paul.

Murthy, Dhiraj. 2008. Digital Ethnography: An Examination of the Use of New Tecnologies for Social Research, *Sociology*, 42; 5: 837- 855.

O'Reilly, Karen. 2005. *Ethnographic Methods*, London: Routledge.

9.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. शोध की एक विधि के रूप में नृवंशविज्ञान आँकड़ा संग्रहण की तकनीकों की एक जटिल श्रृंखला प्रस्तुत करता है, जो कि किसी समूह के रहन–सहन की समग्र समझ विकसित करने संयुक्त रूप से प्रयोग की जाती हैं। नृवंशविज्ञान शोध के एक उत्पाद के रूप में शोध के परिणामस्वरूप शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत एक वर्णनात्मक वृत्तांत होता है।
2. नृवंशविज्ञान शोध के दो मुख्य आभिलक्षण हैं – एक, यह एक लम्बी समयावधि तक शोधकर्ता द्वारा एकत्रित आँकड़ों पर आधारित होता है, जिस दौरान वह लोगों के साथ रहता है और उनकी दैनिक गतिविधियाँ में भाग लेता है; तथा दूसरे, यह लोगों के

दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है और आँकड़ों की व्याख्या अध्ययन के अधीन लोगों के स्थानीय संदर्भ में ही होती है।

बोध प्रश्न 2

1. अनेक स्थानों पर एक साथ नृजातीय अध्ययन कराए जाने के उद्यम को 'बहुस्तरीय नृवंशविज्ञान' कहा जाता है।
2. डिजिटल नृवंशविज्ञान के लिए आँकड़े ऑनलाइन प्रश्नावली, डिजिटल वीडियो, सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स और ब्लॉग्स के माध्यम से एकत्र किए जाते हैं।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY